विदाई सन्देश

प्रियवर स्नेहीजन,

मैं अपने को बहुत भाग्यशाली समझता हूँ कि मेरा पालन पोषण एक ऐसी पौराणिक व ऐतिहासिक नगरी मेरठ में हुआ, जिसे त्रेतायुग में मयराष्ट्र के नाम से जाना जाता था। इसी जिले में एक क्षेत्र था हस्तिनापुर जो कि द्वापर युग में कौरव पांडवों की राजधानी हुआ करती थी। इसी नगर में सन् 1857 में स्वतन्त्रता की प्रथम लड़ाई प्रारम्भ हुई थी। विद्यालय की शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात मेरा आगमन तीर्थराज प्रयागराज में हुआ। यहाँ मुझे संगम क्षेत्र में माँ गंगा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। सरस्वती की असीम कृपा से मेरी रूचि हिन्दी साहित्य व धार्मिक अनुष्ठान की ओर भी अग्रसरित हो गई। यमुना से कुछ गम्भीर प्रवृति मिली। अल्प काल के लिए प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगरी लखनऊ में गोमती के किनारे भी रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

मेरठ मेरा शिक्षा का क्षेत्र व इलाहाबाद अर्थात प्रयागराज व लखनऊ मेरी कर्मभूमि रहे। दोनों ही जगह मुझे कार्य करने में सभी का भरसक सहयोग मिला चाहे वह साथी अधिवक्तागण हों, उच्च न्यायालय के कर्मचारी हों या न्यायिक अधिकारीगण हों। उनके सहयोग के लिए मैं अपने को धन्य मानता हूँ।

पहले ही दिन से चाहे वह अधिवक्ता के रूप में रहा हो या न्यायमूर्ति के सभी लोगों को मुझसे बहुत सी अपेक्षाएं थीं। यह स्वाभाविक भी है परन्तु उन अपेक्षाओं पर खरा उतरना एक कठिन कार्य है। मेरी भी वही गति हुई जो जय शंकर प्रसाद की कामायनी में उस व्यथित व्यक्ति की थी, जो :–

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह।
एक पुरूष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।।

अतः अपेक्षाओं एवं आकाक्षाओं के बीच मैं अपने कार्यकाल में कुछ नया कर पाया या नहीं इसका मुझे ज्ञान नहीं, परन्तु इतना अवश्य है कि मैंने इस गौरवमयी संस्था की परंपराओं के अनुरूप कार्य करते हुए इसकी मर्यादाओं को बनाये रखने का पूरा प्रयास किया। न्यायमूर्ति के रूप में मैंने 14 वर्ष एक प्रकार से स्व–निर्वासन (self exile) में बिताये हैं और यह समय मेरे लिए एक तपस्या से कम नहीं था।

आज मैं नये प्रदेश में जा रहा हूँ जो भारत का हिमकिरीट है। मेरे हाथ में अपने प्रदेश व अपने न्यायालय की पताका है। मुझे विश्वास है कि आपकी शुभकामनाओं के होते हुए मैं यह पताका स्थिर रखते हुए आगे बढाता रहूंगा, संभवतः उसे और ऊँचा कर पाऊँगा।

मैं अपने सहयोगियों का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने वकालत के व्यवसाय में अथवा न्यायमूर्ति के पद के दायित्व के निर्वाह में मेरा पूर्ण सहयोग दिया और जिनके बगैर मेरे लिए कार्य करना नामुमकिन था। मुझसे जुड़े सभी कर्मचारी व अधिकारीगण मेरे विश्वासपात्र हैं। मैं अलग से किसी विशेष का नाम लिए बिना कह सकता हूँ कि वह सभी मेरे बड़े परिवार के सदस्य हैं और हमेशा साथ रहेंगे। मैं सभी को अपने भाई समान समझता हूँ और आशा करता हूँ कि जिसके साथ भी वह कार्य करेंगे अच्छा ही करेंगे और उन्नति के नये आयाम छुएंगे। मैं सभी को ह्रदय से धन्यवाद देता हूँ।

बार के सदस्यों से मुझे विशेष स्नेह प्राप्त हुआ और कभी किसी से अपशब्द सुनने नही पड़े। सभी ने हमेशा मेरे लिए अच्छा ही सोचा और अच्छा ही चाहा। मैं ऐसे शुभचिंतकों का अत्यन्त आभारी हूँ और आगे भी जीवन में उनके सहयोग व शुभकामनाओं की अपेक्षा रखता हूँ। मैं इलाहाबाद व लखनऊ बार के सभी सदस्यों को विशेषकर जो कनिष्ठ अधिवक्तागण हैं को चाहूँगा कि वह अपनी मेहनत, लगन व निष्ठा में कोई कमी न रखें और एक सरल व्यक्तित्व के साथ सहज रूप से कार्य करते रहें, आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

अन्त में विदा लेते हुए इतना अवश्य कहूँगाः–

"गुण तो न था कोई भी, अवगुण मेरे भुला देना।"

–न्यायमूर्ति पंकज मित्थल